नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

# वृन्दावन की देवालयी दैनंदिनी समाज गायन परम्परा की वर्तमान स्थिति

**गंगा प्रिया**
शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

**डॉ. प्रेरणा अरोड़ा**
शोध पर्यवेक्षिका, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

## सार-संक्षेप

*प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश में स्थित वृंदावन के देवालयों में प्रचलित संगीत परंपरा से सम्बन्धित है। प्राचीन देवालयी संगीत परंपरा को समझने के लिए वर्तमान में यहाँ के मंदिरों में गाई जाने वाली प्राचीन 'समाज' गायन परंपरा का अवलोकन करके इसकी वर्तमान स्थिति एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। जिससे सामान्य जन भी लाभान्वित हो सकें। मध्य काल में विदेशी शक्तियों के आक्रमण के कारण जहाँ एक ओर भारत में आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन हुए, वहीं दूसरी ओर भारत की वर्षों पुरानी सांस्कृतिक विरासत भी प्रभावित हुई तथा विदेशी आक्रमणकारियों की संस्कृति का यहाँ के सामान्य जीवन एवं संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ा। जिससे भारतीय संगीत भी प्रभावित हुआ और भारतीय संगीत की चली आ रही प्राचीन परंपरा में भी कई परिवर्तन हुए लेकिन यदि देवालयों की सांगीतिक परम्परा का अवलोकन किया जाय, तो चूंकि विदेशी शक्तियों का मन्दिरों में प्रवेश निषिद्ध रहा इसलिए यहाँ का संगीत भी अपने शुद्ध रूप में सुरक्षित रहा। इसी परंपरा का सजीव चित्रण आज भी हमें भारत के विभिन्न मंदिरों में दिखाई देता है। वृंदावन के देवालयों का संगीत प्राचीन शुद्ध शास्त्रीय ध्रुपद शैली पर आधारित है तथा वर्तमान में इस दैनंदिनी देवालयी सांगीतिक परम्परा के अस्तित्व का अध्ययन करने के लिए अवलोकन, साक्षात्कार एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत साक्षात्कार विधि द्वारा तथ्य एकत्रित किए गए हैं एवं द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थ, पुस्तकें एवं लेख आदि द्वारा तथ्यों का संग्रहण किया गया है। ताकि सामान्य जन भी वृंदावन के देवालयों की विलक्षण सांगीतिक परंपरा के वर्तमान स्थिति से लाभान्वित हो पाएँ।*

**मुख्य शब्द :** वृंदावन, देवालय संगीत, मंदिर परम्परा, ध्रुपद, समाज गायन।

**शोध-पत्र**

## भूमिका

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही धर्म एवं संस्कृति की भूमि रही है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अनेक प्रकार से अपनी आस्था को व्यक्त करने तथा ईश्वरीय सत्ता से जुड़ने के भिन्न-भिन्न साधन स्वीकार किए गए हैं। ''जिसमें विशेष रूप से धर्म का प्रवाह ज्ञान, कर्म और भक्ति इन तीनों धाराओं में निरंतर होता रहता है तथा इन तीनों धाराओं में भक्ति एक प्रमुख साधन है, जो कि प्राचीन काल से ही भारतीय जनमानस को प्रभावित, प्रकाशित एवं निर्देशित करती रही है।'' (निगम 1)

भक्ति का सीधा संबंध भगवद् प्राप्ति अर्थात् मोक्ष प्राप्ति से है। इस भक्ति का केंद्र बिन्दु भारत भूमि के उत्तर प्रदेश का ब्रज क्षेत्र या वृन्दावन रहा है। इसी वृन्दावन के देवालयों में प्राचीन परंपराएँ आज तक जीवित है। चूंकि वृन्दावन प्रेम एवं भक्ति का केंद्र बिन्दु रहा है इसलिए यहाँ विभिन्न आचार्यों द्वारा अपने ईष्ट की आराधना के लिए अपनी विशेष रीति अनुसार नियम पालन किए जाने के कारण विभिन्न सम्प्रदाय विकसित हुए। जिनका सांगीतिक रूप से भी महत्त्व है क्योंकि भक्ति के साधन के रूप में विशेष रूप से संगीत ही इनका माध्यम रहा है।

## देवालय का परिचय

'देवालय' का अर्थ है, देवता का आलय, अर्थात जहाँ साक्षात भगवान का वास है। दर्शनार्थी देवालय में इस श्रद्धा से जाते हैं कि वहाँ जाने पर उनकी प्रार्थना भगवान के चरणों में अर्पित होती है और उन्हें मनःशांति का अनुभव होता है।

इस प्रकार जिस जगह किसी आराध्य देव के प्रति ध्यान या चिंतन किया जाए या वहाँ भगवान का श्री विग्रह स्थापित कर पूजा-अर्चना की जाए

उसे मन्दिर या देवालय कहते हैं। इस तरह वृंदावन में अनेक देवालय सैकड़ों हजारों सालों से अपना अस्तित्व लिए आज भी खड़े हैं।

## वृन्दावन के प्रमुख देवालय

श्री वृन्दावन धाम के प्रमुख देवालय, जहाँ श्री राधा कृष्ण के युगल रूप की भिन्न-भिन्न नामों से पूजा अर्चना की जाती है जहाँ श्री विग्रह की नित्य सेवा में राग, भोग और श्रृंगार से युक्त सेवा की प्रधानता है। इनमें से प्रमुख मन्दिर / देवालय इस प्रकार है–

- श्रीराधागोविंद देवजी,
- श्रीराधामदनमोहनजी,
- श्रीराधागोपीनाथजी,
- श्रीजुगलकिशोर जी,
- श्रीराधारमणजी,
- श्रीराधाबल्लभजी,
- श्रीबांकेबिहारीजी,
- श्रीराधामदनमोहन मंदिर, (भट्ट जी की हवेली)

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य प्राचीन मंदिर भी हैं।

- श्री रसिकबिहारी मंदिर
- श्री गोरेलाल मंदिर
- श्री रंगजी मंदिर,
- शाह जी का मंदिर,
- श्री निधिवन, वृंदावन
- हरिदासी सम्प्रदाय का टटिया स्थान, वृंदावन

उपर्युक्त इन सभी मन्दिरों में प्राचीन काल से ही ठाकुर श्री विग्रह की निजी सेवा को, उत्तम कोटि के विभिन्न पकवान (भोग) व उत्तम कोटि के सुंदर से अति सुंदर (श्रृंगार) एवं वस्त्रालंकार द्वारा सुशोभित करने का विधान है। इसके साथ ही ठाकुर जी के श्री विग्रह के समक्ष उनकी लीलाओं एवं गुणानुवाद को विभिन्न रागों में रसमयी गायन से संपन्न करने का विधान भी रहा है। इस प्रकार उत्कृष्ट राग, भोग और श्रृंगार से युक्त श्रीविग्रह की सेवा का विधान वृंदावन के मंदिरों की प्राचीन समृद्ध परंपरा का द्योतक है। वर्तमान समय में इन मन्दिरों में भोग एवं श्रृंगार सेवा का विधान तो चल रहा है लेकिन व्यवस्था की दृष्टि से या फिर मंदिर प्रबंधन द्वारा समाजियों व पखावजियों को नियमित रूप से न्यौछावर सेवा न उपलब्ध करा पाने के कारण उपर्युक्त मंदिरों में से केवल कुछ ही मंदिर या देवालय ऐसे हैं जिनमें प्राचीन सांगीतिक परंपरा का निर्वहन किया जाता है।

यो तो वृंदावन में भिन्न-भिन्न संप्रदायों द्वारा अपने ईश को समर्पित राग सेवा से संबंधित भिन्न-भिन्न भाव निवेदित है जैसे–''श्री चैतन्य गौडीय संप्रदाय[1] में सामूहिक रूप से भगवन्नाम गायन को 'संकीर्तन' से संबोधित किया जाता है एवं श्री वल्लभाचार्य जी के पुष्टिमार्गीय[2] मंदिरों की अष्टयाम सेवा में इस गायन की क्रिया को 'कीर्तन' से सम्बोधित किया जाता है।'' (गर्ग 33) लेकिन वृंदावन की परंपरा में राग सेवा, प्राचीन काल से ही 'समाज गायन' से संबंधित है।

वृंदावन के इन्हीं देवालयों में प्रचलित संगीत को समाज गायन कहा जाता है। यह समाज गायन वृंदावन की सांगीतिक परंपरा है जो की हर घर में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों में समाज के नाम से प्रचलित है। जैसे– होरी की समाज, हिंडोरे की समाज, दीपावली की समाज आदि।[4]

चूँकि वृंदावन के प्रत्येक घर में मंदिर एवं ठाकुर जी की अष्टयाम सेवा[5] का विधान है।

**घर घर तुलसी ठाकुर सेवा, भोजन दूध दही कौ।**
**आलि रि मोहे लागे वृंदावन नीकौ।।**

अतः ब्रज के घरों में होने वाले उत्सव भी श्री ठाकुर जी को समर्पित कर उनके संग ही मनाए जाते हैं। लेकिन घरों में इसका स्वरूप सूक्ष्म है, जहाँ वृंदावन के लोकगीतों या प्रचलित रस के पदों को गाकर अपनी भावाभिव्यक्ति ठाकुर जी की सेवा के लिए की जाती है लेकिन विशुद्ध रूप में इसका निर्वहन आज भी यहाँ के कुछ मंदिरों में किया जाता है, जो कि विशुद्ध ध्रुपद शैली पर आधारित है। सांगीतिक दृष्टि इन समाजों का विशेष महत्त्व है।

## वृंदावनीय समाज गायन का परिचय

लौकिक दृष्टि से सामान्य व्यवहार में समाज का अर्थ है–गोष्ठी, दल, सभा, समूह तथा गान। विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में भी समाज का भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयोग देखने को मिलता है। ''समाज शब्द का परोक्ष रूप से प्रयोग वैदिक काल से ही सामाजिक उत्सवों के लिए भिन्न-भिन्न रूपों में प्रचलित रहा है, जैसे–'समन' व समज्जा आदि।'' (गर्ग 129)

इस प्रकार यह 'समाज' शब्द प्राचीन काल से ही सामाजिक उत्सव, सामूहिक आयोजन, मेले, नृत्य आदि से संबंधित रहा है लेकिन मध्यकालीन वृंदावन के मंदिरों में 'समाज' शब्द, गायन से संबंधित है अर्थात् श्री श्यामा-श्याम की उपासना एवं प्रीति के लिए जो गायन समूह में हो, उसे 'समाज संगीत' कहा जाता है। अर्थात् ''मध्ययुग में सेवाप्रधान संगीत को 'समाज गान' से पुकारा जाता है।'' (सक्सेना 126)

जो की वृंदावन के विभिन्न मंदिरों में सुनने को मिलता है। जैसे–राधा वल्लभ सम्प्रदाय का राधा वल्लभ मंदिर, हरिदासी सम्प्रदाय का निधिवन एवं टटिया स्थान आदि, गौडीय संप्रदाय का श्री राधा मदन मोहन मन्दिर (भट्ट जी की हवेली), निंबार्क संप्रदाय का निंबार्क कोट आदि। इन सभी आचार्यों ने अपने प्रिया-प्रियतम को रिझाने के लिए संगीत का आश्रय लिया है।

यदि इस समाज गान की प्राचीनता को देखा जाय तो इसके दो रूप दिखाई पड़ते हैं एक तो पारलौकिक दृष्टि से मध्यकालीन मंदिरों की समाज में गाए जाने वाले आचार्यों के वाणी ग्रंथों में भी 'समाज' शब्द का उल्लेख मिलता है। जिसमें श्यामा-श्याम के समक्ष सखियों द्वारा समाज गान का उल्लेख मिलता है।

**दंपति अति अनुराग मुदित कल, गान करत मन हरत परस्पर।**
**जय श्री हित हरिवंश प्रसंश परायण, गायन अलि सुर देत मधुर तर।।**

-श्री हित हरिवंश जी का पद

**आज समाज सहज सुख बरसत, हरषत मिलि मन माँहिं।।**

-श्री बिहारिन देव जी का पद

तथा दूसरा, लौकिक रूप से मंदिरों में गाए जाने वाले समाज गायन में देखने को मिलता है। इसमें वृंदावन के मंदिरो में होने वाले समाज गायन एवं समाज गाने वाले समाजी गायक आते है।

इस प्रकार मध्ययुगीन वृंदावन के मंदिरों की यह समाज गायन परंपरा अत्यधिक प्राचीन सांगीतिक परंपरा है जिसका निर्वहन आज भी वृंदावन के मंदिरों में देखने को मिलता है।

वृंदावन के मंदिरो में यह समाज गान दो गुट या समूह द्वारा किया जाता है। नियमानुसार संप्रदाय के समाज गायक दो दलों में विभक्त हो जाते हैं तथा अपने श्यामा-श्याम की छवि या सेवित विग्रह के समक्ष दो पंक्तियों में बैठकर अपने आचार्य उत्सव के पदों का गायन करते हैं।

एक पंक्ति को 'झेला दल' या 'मुखिया दल' कहा जाता है जिसमें संप्रदाय के सभी वरिष्ठ विरक्त साधक दाहिनी पंक्ति में बैठते हैं। इस दल में जो मुखिया समाजी होता है, प्रायः हारमोनियम वाद्य का वादन उसी के द्वारा किया जाता है व दूसरी पंक्ति जिसे 'चेला दल' कहा जाता है इसमें नवागंतुक विरक्त साधक बाईं ओर बैठते हैं तथा सेव्य विग्रह के समक्ष पखावज वादक बैठकर वादन करते हैं। समाज का गायन 'मुखिया दल' प्रारंभ करता है फिर उसी पंक्ति को 'चेला दल' पुनः दोहराते हैं। इस प्रकार वृंदावन के विभिन्न मन्दिरों की सांगीतिक परंपरा में यह 'समाज गान' प्रचलित है।

वर्तमान में पारंपरिक रूप से वृंदावन की इस सांगीतिक परंपरा का निर्वहन वृंदावन के प्रमुख रूप से इन चार संप्रदायों यथा–राधा वल्लभ संप्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय, गौडीय संप्रदाय के अंतर्गत भट्ट जी का मंदिर, निंबार्क सम्प्रदाय आदि के अलग-अलग मंदिरो में आज भी किया जाता है तथा इन्हीं संप्रदायों की छोटी-छोटी अन्य शाखाओं / मंदिरों में भी छोटे रूप में समाजों का आयोजन किया जाता है।

यद्यपि वृंदावन के उपर्युक्त इन चार संप्रदायों की सांगीतिक परंपरा के अतिरिक्त वृंदावन में कहीं-कहीं वल्लभ संप्रदाय की भी अपनी सांगीतिक परंपरा का प्रचलन देखने को मिलता है, जो कि आमतौर पर पुष्टिमार्गीय (हवेली संगीत) के नाम से प्रचलित है लेकिन ''पुष्टिमार्गीय परंपरा में महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी द्वारा पुष्टि भक्ति में जन सामान्य की भागीदारी सहज करने के लिए इस मार्ग को ब्रज संस्कृति और ब्रज संगीत के लावण्य से जोड़ा गया था तथा अपने-अपने निजी भक्त सेवकों में से श्री कुंभन दास जी, सूरदास जी तथा परमानंद दास जी को नियमित कीर्तनकार के रूप में नियुक्त करके कीर्तन व्यवस्था को सेवा पद्धति का एक अनिवार्य अंग घोषित कर दिया था। आप श्री के आत्मज श्री विट्ठल नाथ जी श्री गोसाई जी ने अपने सेवकों में गोविंद स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुज दास तथा नंददास को इसी श्रृंखला में कीर्तनकार के रूप में जोड़कर अष्टछाप की पावन प्रतिष्ठा की।'' (बर्मन 18)

जिसका प्रचार विशेष रूप से गुजरात एवं राजस्थान में स्थित नाथद्वारा मंदिर में अधिक रहा। अतः स्पष्ट है कि पुष्टिमार्गीय भक्ति में प्रचलित संगीत को 'कीर्तन' की संज्ञा दी जाती है न कि समाज गायन की। गुजरात में पुष्टिमार्गीय मन्दिरों को 'हवेली' कहा जाता था अतः ''डॉ. डी.जी. व्यास व पुष्टि सम्प्रदाय संगीत के सर्वाधिक प्रसिद्ध संगीतकार श्री लक्ष्मण प्रसाद चौबे (मथुरा) के परामर्श से वहाँ गाए जाने वाले 'पुष्टिमार्गीय संगीत' को आकाशवाणी ने 'हवेली संगीत' नाम दे दिया। इस प्रकार 'हवेली संगीत' नामकरण प्राचीन नहीं बल्कि अत्यधिक आधुनिक है।'' (शर्मा 41)

यद्यपि दोनों ही परंपराओं में विशुद्ध ध्रुपद-धमार गायन शैली का प्रचलन है। लेकिन फिर भी भिन्नता है।

''पुष्टिमार्ग में ठाकुर जी की सेवा पद्धति में निजी गृह में सेवा का विधान है, इसमें निज हवेली (गृह) में निजी रूप से ही एकल या युगल गायन के साथ हवेली में वास करने वाले गोस्वामियों द्वारा भाव के साथ संप्रदाय के अष्ट छाप के आचार्यों के वाणी पदों के गायन की प्रधानता है।'' (भट्ट) तथा बाहरी आगंतुकों द्वारा गायन में सम्मिलित होने का विधान नहीं है लेकिन वृंदावन के समाज गायन में समूह (दल) के महत्त्व के साथ-साथ अनुराग एवं वाणी पद की प्रधानता है। यद्यपि इनमें (हवेली) भी विष्णु पदों का ही गायन किया जाता है फिर भी यह वृंदावन की सांगीतिक परंपरा से भिन्न है। अतः हवेली संगीत को वृंदावन की समाज गान रूपी सांगीतिक परंपरा से भिन्न समझना चाहिए।

इस प्रकार परंपरागत रूप से वृंदावन की समाज गायन की परंपरा का निर्वहन करने वाले प्रमुख देवालयों का परिचय इस प्रकार है–

## वृंदावन में समाज गायन के प्रमुख देवालय

### हित हरिवंश संप्रदाय का श्री राधाबल्लभ मंदिर

श्री राधा वल्लभ मंदिर, यह भारत के उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के वृन्दावन में स्थित एक ऐतिहासिक मंदिर है। जिसमें श्री राधा वल्लभ लाल जी विराजमान हैं। यह मंदिर राधा वल्लभ संप्रदाय से संबंधित है जिसके प्रणेता श्री हित हरिवंश जी थे। वृंदावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार के Acc. क्र० सं० 11544-A पर उपलब्ध ग्रंथ ''हित जू की जनम बधाई'' शीर्षक ग्रंथ के अनुसार इनका जन्म वि० सं० 1530 बैशाख शुक्ल एकादशी में हुआ था तथा ''इनके आराध्य देव श्री राधा

बल्लभ जी अपने मन्दिर में विक्रम संवत् 1565 कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी को विराजे। इसलिए इस दिन मनाए जाने वाले उत्सव को पाटोत्सव भी कहा जाता है।'' (शुक्ल, 52)

प्राचीन श्री राधावल्लभ मंदिर का निर्माण लगभग 16वीं शती में हित हरिवंश महाप्रभु के पुत्र श्री वनचंद्रजी के शिष्य सुंदरदास भटनागर ने करवाया था लेकिन मुगलों के आक्रमण के कारण वहाँ श्री विग्रह विराजमान न हो सके और लगभग 123 वर्ष काम वन में विराजे। फिर वर्तमान श्रीराधावल्लभ मंदिर, जिसका निर्माण लगभग वि.सं. 1880-81 ई. में करवाया गया। वहाँ श्री विग्रह विराजमान हुए और तभी से उनकी सेवा पूजा एवं समाज गायन उनके अनुयायियों द्वारा यथावत चली आ रही है। ''श्री हित हरिवंश महाप्रभु के काल से ही श्री राधावल्लभ लाल जी की सेवा गृहस्थ परंपरा से निर्वहित की जाती है।'' (वल्लभ)

राधा वल्लभ संप्रदाय के समाज गायक श्री हितजीवन वल्लभ जी के अनुसार, वृंदावन के समाज गायन के प्रवर्तक श्री हितहरिवंश महाप्रभु माने जाते हैं। उनके समय में वृंदावन के रसिक त्रिवेणी श्री हित हरिवंश महाप्रभु, श्री हरिराम व्यास जी एवं श्री स्वामी हरिदास जी एक साथ बैठकर श्री श्यामा-श्याम का चिंतन करते हुए सामूहिक रूप से लीला पदों का गायन करते थे। इसका प्रमाण यह है कि संप्रदाय के वाणी ग्रंथों में राधावल्लभ संप्रदाय के अतिरिक्त अन्य संप्रदायों के रसिकाचार्यों के पदों का भी गायन यहाँ की समाज में सम्मिलित है जिससे यह प्रमाणित होता है कि यहाँ सभी आचार्य एक साथ बैठकर रस के पदों का गायन किया करते थे। ''इस प्रकार श्री हित हरिवंश महाप्रभु ने सामवैदिक स्वर प्रधान संगीत को अक्षर प्रधान बनाकर एक नवीन गान पद्धति समाज गान को जन्म दिया।'' (सक्सेना 126) इसकी पुष्टि राधा बल्लभ भक्तमाल ग्रंथ में भी मिलती है कि ''श्री हरिवंश महाप्रभु ने ब्रज के रास के साथ समाज को भी श्री स्वामी हरिदास जी के साथ मिलकर प्रचारित व संवर्धित किया।'' (शुक्ल 61)

श्री राधावल्लभ लाल जी उत्सव प्रेमी है अतः यहाँ प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दिन उत्सव है।

**सखियन के उर ऐसी आई,**
**ब्याह बिनोद रचें सुखदाई।**

- ध्रुवदास जी का पद

अर्थात जब भी किसी सखी के हृदय में श्री प्रिया लाल जी के ब्याह उत्सव दर्शन की लालसा जागृत होती है, तभी उत्सव हो जाता है। अतः यहाँ बारह मास नित्य उत्सव है।

इस प्रकार श्री राधा वल्लभ लाल जी के समक्ष प्रतिदिन सुबह एवं सायं दो-दो घंटे ऋतु अनुसार समाज गायन किया जाता है। जिसमें रसिकाचार्यों के वाणी पदों को बड़े भाव से श्री ठाकुर जी को श्रवण कराया जाता है। इसके अतिरिक्त संप्रदाय के आचार्योत्सवों एवं वर्षोत्सवों में विशेष समाज गायन का क्रम निर्धारित है।

जैसे–

**हितोत्सव**–इसमें चैत्र शुक्ल पक्ष से बैशाख मास तक (40 दिन तक) संप्रदाय संस्थापक आचार्य श्री हितहरिवंश महाप्रभु का अविर्भावोत्सव विशेष समाज गायन के साथ मनाया जाता है। यह राधा वल्लभ संप्रदाय का विशेष उत्सव है।

इसके अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु में चंदन, फूल डोल आदि पदों का गायन, सावन में झूलन और वर्षा ऋतु के पद, कृष्ण जन्माष्टमी में 7 दिन का विशेष समाज का गायन, राधाष्टमी पर 15 दिन की समाज, पितृ पक्ष में सांझी[6] की समाज, शरद पूर्णिमा पर रास की समाज, बसंत से फाल्गुन पूर्णिमा होरी तक 45 दिन की विशेष समाज गायन का क्रम निर्धारित रहता है तथा समय-समय पर राधा वल्लभ लाल जी के ब्याह का उत्सव, जिसे ब्रज में 'ब्याहुलौ का उत्सव' कहा जाता है, यह विशेष आकर्षित करने वाला रहता है। इस प्रकार यहाँ की समाज गायन परंपरा लगभग 550 वर्ष पुरानी अभी भी जीवित है।

## श्री हरिदासी संप्रदाय का टटिया स्थान

वृन्दावन के रसिकाचार्य एवं संगीत शिरोमणि श्री स्वामी हरिदासजी के संप्रदाय का प्रमुख केंद्र वर्तमान में वृंदावन स्थित टटिया स्थान है। ''जिसकी स्थापना लगभग 300 वर्ष पूर्व हरिदासी सम्प्रदाय के सातवें आचार्य, श्री स्वामी ललित किशोरी देव जी (सन् 1733 - 1823) के द्वारा हुई।'' (मीतल 473) स्वभाव से परम बैरागी एवं एकान्त प्रिय होने कारण अपने गुरु स्थान श्री रसिक बिहारी मन्दिर की आचार्य गद्दी को स्वीकार न करते हुए, ''अत्यंत विरक्त भाव से वे यमुना किनारे राधा बाग (वर्तमान टटिया स्थान) नामक स्थान पर पीपल के वृक्ष के नीचे रसोपासना के लिए आ गए, उनके भजन के प्रताप से सूखा हुआ वह पीपल का वृक्ष हरा-भरा हो गया। सुरक्षा की दृष्टि से बांस की टटियों से घेर दिए जाने के कारण बाद में इस स्थान का नाम 'टटिया स्थान' पड़ गया।'' (शरण देव)

स्वामी हरिदासजी के समय से यहाँ समाज (समूह) गायन का प्रचलन नहीं था बल्कि साधक गण श्री श्यामा-श्याम की लीलाओं का मानसी चिंतन में सखियों के सानिध्य में रसास्वादन करते हुए अनुराग में गायन करते थे। ''पारलौकिक दृष्टि से भले ही यह समाज गान था पर लौकिक दृष्टि से यह एकाकी गायन के स्वरूप में विद्यमान था।'' (सक्सेना 171)

संप्रदाय की यह सांगीतिक परम्परा नष्ट न हो जाए इस उद्देश्य से ही श्री ललित किशोरी देव जी ने हरिदासी सम्प्रदाय में प्रचलित अनुराग संगीत को समाज गायन का स्वरूप देकर प्रचलित किया व अपने प्रिय शिष्य श्रीललित मोहिनी देव जी को सिखाया। बाद में उनके ही शिष्य श्रीललितमोहिनी देव जी ने समाज के पदों को राग, ताल, मात्रा में निबद्ध करके उसका स्वरूप विधि-विधान के साथ निर्धारित किया ताकि सामान्य जन भी इससे लाभान्वित हो सकें। तभी से यह परंपरा उत्तर प्रदेश के वृंदावन में टटिया स्थान नामक जगह पर विगत 300 वर्षों से आज तक अक्षुण्ण चली आ रही है।

यहाँ के समाज गायन की विशेषता यह है कि यहाँ स्वामी हरिदासजी की रसोपासना की अनन्यता होने के कारण, केवल संप्रदाय के आचार्यों के ही पदों का गायन किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से देखा जाय तो वर्तमान में समाज गायन की शुद्धता यदि कहीं विद्यमान है तो वह आज भी यहीं विद्यमान है। जो कि विशुद्ध ध्रुपद शैली पर आधारित है।

जिसका निर्वहन यहाँ 19वीं पीढ़ी के वर्तमान आचार्य श्री राधाबिहारी दास जी के संरक्षण में आज भी बखूबी हो रहा है। समाज गायन में विशेष रूप से यहाँ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन स्वामी हरिदास जी का प्राकट्योत्सव 8 दिवसीय समाज गायन के साथ विशेष रूप से मनाया जाता है।

इसके अतिरिक्त वर्ष भर के आचार्योत्सवों में भी समाज गाई जाती है जैसे–जागरण उत्सव, वसंतोत्सव, होरी उत्सव, फूल डोल, झूलन एवं चंदन यात्रा, सावन हरियाली तीज उत्सव, शरद पूर्णिमा रासोत्सव, बिहारी जी का प्रकटोत्सव आदि पर्वों पर समाज गायन प्राचीन विशुद्ध ध्रुपद परंपरा अनुसार किया जाता है इसके अतिरिक्त प्रतिदिन श्री ठाकुरजी के समक्ष संध्या के समय 1 से 2 घंटे की समाज सूक्ष्म रूप से गाई जाती है।

## गौडीय सम्प्रदाय का श्री राधा मदन मोहन मन्दिर (भट्ट जी की हवेली)

गौडीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख शिष्यों में से वृन्दावन के प्रसिद्ध छह गोस्वामी, जिनमें से एक श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी जी हुए। ''इन्हीं के शिष्य श्री गदाधर भट्ट गोस्वामी जी सन् 1610 में वृन्दावन आये।'' (सक्सेना 249) तदोपरांत ''यमुना पुलिन से प्रकट श्री राधामदन मोहन लाल जी माघ शुक्ल वसंत पंचमी के दिन वर्तमान भट्ट जी के मंदिर में विराजमान किए गए एवं इनकी सेवा पद्धतियाँ प्रचलित की गयी।'' (कृष्ण भट्ट)

''श्रीचैतन्य संप्रदायांतर्गत, षडगोस्वामी मध्य श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी परम्परा, एकमात्र रूप में स्थापित ऐसी परंपरा है जिसमें भगवदाराधन के दोनों रूप यथा भगवद् नाम संकीर्तन एवं भगवद् लीला गायन समान रूप से प्रतिष्ठित एवं संरक्षित है।'' (भट्ट 224)

संप्रदाय आचार्यों के उत्सवों पर नाम संकीर्तन का सिद्धांत स्थापित है एवं श्री प्रभु के उत्सवों पर भगवद् लीला के गायन का विधान है। यह भगवद् लीला का गायन श्रीप्रभु के सम्मुख अथवा सेवा स्थल पर अपने वैष्णव वृंद के मध्य समूह में किया जाता है। इसलिए इसे ब्रज की सामान्य बोलचाल की भाषा में समाज गायन से संबोधित किया जाता है।

16वीं शताब्दी में श्री गदाधर भट्ट जी महाराज द्वारा शुरू की गई यह परंपरा, उनके वंशजों द्वारा आज भी निर्वाहित की जा रही है, जिनमें श्री राधामदन मोहन लालजी की अष्ट्याम सेवा के साथ गायन के ये दोनों रूप-नाम संकीर्तन एवं भगवद् लीला गायन आज भी सुरक्षित है। वर्तमान में इस परम्परा के प्रमुख आचार्य श्री जनार्दन कृष्ण भट्ट गोस्वामी जी हैं।

भट्ट जी की हवेली में गाई जाने वाली समाज में विशेष रूप से बसंत पंचमी से लेकर फाल्गुन पूर्णिमा होरी तक श्री ठाकुर जी को विभिन्न रंगों के खेल के साथ सजाया जाता है एवं 40 दिन तक समाज गायन किया जाता है। जो कि पारंपरिक भव्यता से ओत-प्रोत रहता है।

इसके अतिरिक्त श्री राम नवमी, चंदन यात्रा, अक्षय तृतीया, फूल डोल, रथयात्रा, श्री नृसिंह जयंती, श्री जन्माष्टमी, श्री राधाष्टमी, सांझी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, ब्याहुलै को उत्सव आदि पर भी समाज का गायन परंपरा के आचार्यों द्वारा ही किया जाता है अलग से समाजी गायक नहीं होते हैं तथा वर्तमान में नित्य समाज गायन का क्रम अब यहाँ समाप्त प्राय हो गया है।

## निंबार्क सम्प्रदाय का निंबार्क कोट मन्दिर

वृंदावन में वैष्णव परंपरा के अंतर्गत निंबार्क संप्रदाय में समाज गायन परंपरा का निर्वहन करने वाला मंदिर श्री निंबार्क कोट के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका निर्माण आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व श्री हंसदास जी महाराज के कृपा पात्र श्री बाल गोविंद दास जी की प्रेरणा से उनके पिता श्री भगवत नारायण प्रसाद जी ने सन् 1925 में करवाया था जो कि वृंदावन में बनखंडी महादेव मंदिर के समीप स्थित है।

इस मंदिर में श्री राधारमण लाल जी के विग्रह के साथ श्री निंबार्क पंचायतन के विग्रह विराजमान है। संप्रदाय के आचार्य श्री गोपालदास भक्तमाली जी महाराज ने सन् 1846 में संकल्प के साथ श्री निंबार्क भगवान की जयंती के उपलक्ष्य में 40 दिन की समाज गायन का क्रम आरंभ किया था। इससे पहले निंबार्क संप्रदाय में समाज गायन की सेवा का नियम नहीं था।'' (गोपाल जी)

निंबार्क संप्रदाय के निंबार्क कोट मन्दिर के गद्दी आचार्य एवं समाजी मुखिया परंपरा :- (गोपाल जी)

श्री गोपाल दास जी भक्तमाली 1846-1892
श्री हंसदास जी महाराज 1892 - 1936
श्री बालगोविंददास जी महाराज 1936 - 1949
माता श्यामप्यारी देवी 1950 - 1982
श्री वृंदावनबिहारी दास जी 1982 - वर्तमान तक

विभिन्न उत्सवों में भी यहाँ समाज गायन किया जाता है। जैसे–नारद जयंती, पौष मास पूर्णिमा, माघ शुक्ल पंचमी को श्री निवासाचार्य जयंती की समाज, अक्षय तृतीया के दिन पाटोत्सव की समाज, फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को श्री विश्वाचार्य जी की जयंती होरी समाज के रूप में मनाई जाती है लेकिन प्रमुख रूप से, कार्तिक कृष्ण पंचमी से कार्तिक पूर्णिमा तक 1 माह का समाज गायन निंबार्क संप्रदाय के आचार्य वृन्द की जयंती के साथ हर्षोल्लास से मनाया जाता है जिसे, प्रतिदिन आचार्यों की चरित्र कथा, समाज गायन एवं रासलीला के आयोजन के साथ सम्पन्न किया जाता है फिर ''कार्तिक पूर्णिमा के अगले दिन समाज गायन की विश्रांति के उपलक्ष में 1847 से प्रतिवर्ष श्रीनिंबार्क भगवान की शोभायात्रा बड़े

धूमधाम से निकाली जाती है जो की वृंदावन के इतिहास में सबसे प्राचीन शोभायात्रा है।'' (बिहारी दास)

## वृंदावन के देवालयों की सांगीतिक (समाज गायन) परंपरा की विशेषताएँ

वृंदावन के देवालयी संगीत की विशेषताएँ यहाँ की गायन शैली, प्रयुक्त राग एवं ताल, प्रयुक्त साहित्य आदि आयामों पर आधारित हैं।

### गायन शैली

सांगीतिक दृष्टि से अवलोकन करने पर यह दृष्टिगोचर होता है कि ब्रज के देवालयों की यह सांगीतिक परंपरा शास्त्रीय ध्रुपद-धमार गायन शैली पर आधारित है। इनका गायन, पदों की चारों तुक यथा स्थाई, अंतरा, संचारी व आभोग में ही किया जाता है। हरिदासी संप्रदाय के स्वामी हरिदास जी द्वारा रचित राग धनाश्री, चौताल पर आधारित पद देखें–

**स्थाई** – बेंनी गुंथि कहा कोउ जानें मेरी सी तेरी सौं राधे।

**अंतरा** – बिच बिच फूल सेत पित राते को करि सकै एरी सौं राधे॥

**संचारी** – बैठे रसिक सँवारनि बारनि कोमल कर ककही सौं साधे।

**आभोग** – श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा नखसिख लौं बनाई, दै काजर नखही सौं आधे॥

इसी प्रकार निंबार्क सम्प्रदाय में भी ध्रुपद की चारों तुक गाई जाती हैं।

राग चर्चरी पर आधारित पद देखें–

**स्थाई** – जै जै श्रीनिम्बभान गोवर्धन निज स्थान,

**अंतरा** – निम्बग्राम बसत धाय सन्तन सुखदाई।

**संचारी** – ऋषियन के वृन्द आय देवन की घटा छाय, भक्तन को कियो भाय वेदन ध्वनि बाई ॥१॥

**स्थाई** – श्याम गात अति सुहात मुद्रावर अभय हाथ,

**अंतरा** – ज्ञान खान यश वितान चिन्तामणि पाई।

**संचारी** – गुणियनके अचिन्त्यधाम भक्तन के पूर्ण काम,

**आभोग** – चरण शरण 'रूपरसिक' गावत बधाई ॥२॥

तथा आभोग में रचियता की छाप आती है।

वृंदावन की समाज गायन में सम्पूर्ण पद कभी भी एक साथ नहीं गाया जाता है बल्कि मुखिया दल द्वारा पहली पंक्ति गाकर ताल के आधे आवर्तन से ए हांऽऽ, की टेर (संक्षिप्त निबद्ध आलाप) लिया जाता है फिर इसी क्रम को झेला दल पुनरावृत्ति करते हैं। इसके पश्चात् पद की पहली एवं दूसरी पंक्ति की पुनरावृत्ति मुखिया दल द्वारा की जाती है एवं फिर से ताल के आधे या चौथाई भाग से ए री हांऽऽ शब्द बोलकर दो से तीन आवर्तन तक लम्बे चलने वाले आलाप गाए जाते हैं जिसकी पुनरावृत्ति झेला दल द्वारा की जाती है। इस प्रकार स्थाई का गायन करते हुए फिर अंतरा व संचारी गाई जाती है तथा उसमें भी इसी तरह से एक-एक करके पूरा अंतरा धीरे-धीरे पुनरावृत्ति के साथ स्थापित किया जाता है। तत्पश्चात् यदि पद एक से अधिक जोड़े का है तो फिर से प्रथम अंतरे के स्वरों में ही दूसरा अंतरा भी ठीक वैसे ही गाया जाता है। अंत में आभोग की पंक्ति को अंतरा की भाँति गाकर स्थाई के स्वरों में पद गायन की विश्रांति की जाती है। जिसमें अंत में तिहाई पूरी पंक्ति गाकर की जाती है। ब्रज के समाज गायन में अलग-अलग मंदिरों में आलाप के शब्दों में थोड़ी बहुत भिन्नता होती है जैसे–ए हांऽऽ, अहोऽऽ, आहोऽऽ, ए हांऽ हब्बेऽऽ, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये सभी शब्दावली ब्रज की समाज गायन का विशेष अंग है। जिनका प्रयोग शास्त्रीय रूप से तो पदों की पंक्ति की तुकों को मिलाने के लिए किया जाता है लेकिन पद की भावाभिव्यक्ति में श्यामा-श्याम की विभिन्न प्रेम लीलाओं के रसास्वादन के लिए एक सखी द्वारा दूसरी सखी को बुलाने का सूचक है।

इस प्रकार समाज गायन में श्यामा-श्याम की लीलाओं का चिंतन करते हुए धीरे-धीरे पदों को गाकर स्थापित किया जाता है।

### प्रयुक्त राग

समाज में प्राचीन राग जैसे–सारंग, मल्हार, कल्याण, बिहाग, काफी, आसावरी, परज, गौरी, धनाश्री, कान्हरा आदि रागों का गायन प्रमुख है।

### प्रयुक्त ताल

ताल की संगत के लिए पखावज वाद्य का वादन किया जाता है जिसमें चौताल, रूपक, धमार ताल, तीनताल, दीपचंदी, कहरवा आदि प्रमुख हैं।

### प्रहर एवं ऋतुकालीन साहित्य प्रयोग

वृंदावन के देवालयों का संगीत ऋतुकालीन एवं प्रहर प्रधान है। अर्थात ऋतु विशेष के अनुसार गायन का क्रम निर्धारित रहता है जैसे–बसंत ऋतु में पुष्प, बसंत, फूल डोल आदि के पदों का समायोजन रहता है। वर्षा ऋतु में सावन के झूलन के पद व ग्रीष्म ऋतु में चंदन, फूलों के पद व जलविहार के पदों का गायन किया जाता है तथा शरद ऋतु में रास के पद, दशहरा एवं दीपोत्सव से संबंधित पदों का गायन किया जाता है।

हरिदासी सम्प्रदाय का ग्रीष्म ऋतु का एक पद उदाहरणस्वरूप देखें–

ग्रीषम रितु हित जानि प्रानपति छिरकत छींट लगावत चंदन।
चंदन पावस वारि खौर करि कमलमाल पहिराइ सुगंधन॥
अरगजा अतर घोरि कस्तूरी चित्रित चोली रचित सुछंदन।
अति उदार रिझवार कहत अब दासिकिसोर निरखि आनंदन॥

इस पद में ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करते हुए ऋतु अनुसार चंदन, कमल पुष्प, सुगंध आदि का वर्णन है।

ऐसे ही भिन्न-भिन्न ऋतुओं के अनुसार प्रत्येक दिवस में प्रहर के अनुसार पदों का गायन किया जाता है। जैसे–प्रातः कालीन गाए जाने वाले पदों में श्री प्रिया-प्रियतम को जगाने के पदों की बहुलता रहती है। दिन के दूसरे प्रहर में शृंगार से संबंधित पदों की प्रधानता, फिर दिन में वन विहार के पद, सायं काल में भोग के पद व रात्रि में शयन के पदों का गायन किया जाता है।

राधा वल्लभ सम्प्रदाय के सायं भोग से सम्बन्धित एक पद का उदाहरण देखें–

*संध्या भोग अली लै आईं।*
*पेड़ा-खुरमा और जलेबी, लडुआ-खजला और*
*इमरती मोदक मगद मलाई॥*
*कंचन-थार धरे भरि आगैं, पिस्ता अरु बादाम रलाई।*
*खात-खवावत लेत परस्पर, हँसनि दसन-चमकनि अधिकाई ॥*

भोग से संबंधित इस पद में सभी तरह के भोजन पदार्थों का वर्णन है तथा इसी से संबंधित सायं कालीन राग का निर्धारण रहता है।

वृंदावन की यह समाज गायन परंपरा संगीत की उत्कृष्ट धरोहर है, जिसका संरक्षण एवं संवर्धन होना आवश्यक है इस हेतु कुछ सुझाव निम्नवत हैं–

**वृन्दावनीय समाज गायन परम्परा को संरक्षित करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव –**

- सर्वप्रथम वृंदावन के जिन-जिन मंदिरों में समाज गायन होता है वहाँ के पूरे वर्ष भर के समाज गायन को ऑडियो या वीडियो के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है जिनमें से शोधार्थी द्वारा हरिदासी संप्रदाय की समाज गायन को ऑडियो माध्यम से संरक्षित कर लिया गया है।
- ऑडियो या वीडियो के माध्यम से संरक्षित किए गये समाज गायन को स्वरलिपिबद्ध किया जा सकता है।
- वृंदावन के प्रमुख मंदिरों के समाज गायकों को आर्थिक प्रोत्साहन की सुविधा प्रदान की जा सकती है।
- वृंदावनीय समाज गायन की परंपरा अनवरत आगे बढ़ती रहे, इसके लिए प्रमुख समाज गायकों द्वारा नवीन साधकों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ प्रशिक्षण देने हेतु सुविधा प्रदान की जा सकती है।

## निष्कर्ष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो श्रीहरिदासी सम्प्रदाय में केवल निकुंज लीला से संबंधित अपने सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा रचित पदों का ही सन्निवेश है जबकि राधावल्लभ संप्रदाय की समाज में संप्रदाय के आचार्यों की वाणियों के अतिरिक्त अन्य संप्रदाय के आचार्यों के भी रसिक पदों के गायन का विधान है। इसके अतिरिक्त निंबार्क संप्रदाय में निंबार्क संप्रदाय के आचार्यों की वाणी पदों के अतिरिक्त हरिदासी संप्रदाय के आचार्यों के वाणी पदों का भी सन्निवेश रहता है क्योंकि हरिदासी सम्प्रदाय निंबार्क संप्रदाय की ही एक शाखा है लेकिन गौड़ीय सम्प्रदाय के भट्ट जी की हवेली में समाज गायन के अंर्तगत वहाँ के आचार्यों की वाणियों के अतिरिक्त अन्य संप्रदाय के आचार्यों के भी रसिक पदों का गायन किया जाता है। अर्थात् संप्रदाय में निकुंज लीला के अतिरिक्त ब्रज लीला के पदों का भी सन्निवेश है तथा कहीं-कहीं वृंदावन लीला का भी उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार यदि राधावल्लभ संप्रदाय एवं गौडीय संप्रदाय (भट्ट जी की हवेली) मंदिर के समाज गायन को देखा जाए तो इन दोनों जगहों की गायन शैली में काफी समानता दिखाई देती है तथा पद गायन की दृष्टि से भी दोनों ही संप्रदायों में वृंदावन के सभी रसिक आचार्यों की वाणियों के गायन का उल्लेख मिलता है जो कि अपने सम्प्रदाय में वृंदावन के अन्य सभी रसिकाचार्यों के प्रति व्यापक रूप से सम्मान को दर्शाता है तथा हरिदासी संप्रदाय में केवल अपने ही आचार्यों के पदों का गायन उनकी संप्रदायांतर्गत आचार्यों के प्रति अपनी अनन्यता के भाव का द्योतक है। इसके अतिरिक्त उत्सव समाजों की यदि बात की जाए तो ब्याहुला (राधा कृष्ण का विवाहोत्सव) नामक उत्सव की समाज का गायन केवल राधावल्लभ सम्प्रदाय एवं गौडीय संप्रदाय (भट्ट जी की हवेली) में ही किया जाता है। जो कि हरिदासी एवं निंबार्कियों में प्रचलित नहीं है। यदि नित्य समाज गायन की बात की जाए तो हरिदासी संप्रदाय के मुख्य केंद्र टटिया स्थान में सायंकालीन नित्य समाज गाई जाती है। राधावल्लभ संप्रदाय में भी सुबह 10 से 12 और शाम को 5 से 7:00 बजे तक नित्य समाज गायन किया जाता है लेकिन निंबार्क कोट मंदिर एवं भट्ट जी की हवेली में नित्य समाज गायन का क्रम वर्तमान में विद्यमान नहीं है केवल आचार्य एवं भागवत उत्सवों पर ही समाज गाई जाती है।

यदि समाज गायन में शुद्धता की दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो, यद्यपि समाज गायन शैली का प्रवर्तन राधावल्लभ संप्रदाय के आचार्य श्री हित हरिवंश महाप्रभु से माना जाता है लेकिन वर्तमान में हरिदासी संप्रदाय इस परंपरा का उत्कृष्ट रूप से निर्वहन कर रहा है। इसके अतिरिक्त समाज गायकों की यदि बात की जाए तो राधा वल्लभ संप्रदाय में समाज गायन की परंपरा का निर्वहन वहाँ के गृहस्थ समाजी गायक ही करते हैं तथा इनके गृहस्थ जीविकोपार्जन का यही एकमात्र साधन भी है। गौडीय सम्प्रदाय (भट्ट जी की हवेली) में वहाँ के आचार्य एवं गोस्वामी गण स्वयं ही समाज गायन करते हैं। निंबार्क कोट मन्दिर में भी वहाँ के गद्दी आचार्य स्वयं ही समाज का गायन करते हैं तथा संगत के लिए निंबार्क संप्रदाय के अन्य मंदिरों से संतो को बुलावा भेजा जाता है इसके अतिरिक्त हरिदासी सम्प्रदाय का निर्वहन चुंकि विरक्त परंपरा से किया जाता है इसलिए यहाँ गद्दी आचार्य तथा समाजी गायक अलग-अलग होते हैं। इसके अतिरिक्त प्रमुख रूप से समाज गायन के उपर्युक्त सभी स्थलों में से केवल हरिदासी संप्रदाय ही ऐसा स्थान है जहाँ विरक्त परंपरा से समाज गायन किया जाता है। यहाँ समाज गायन विशेष रूप से अपने उत्कृष्ट रूप में आज भी विद्यमान है अन्यत्र सभी जगह गृहस्थ परंपरा से ही राग सेवा विद्यमान है।

प्रायः देखा जा सकता है कि जिन मंदिरों में दानदाताओं के द्वारा आर्थिक योगदान किया जाता है वहीं पर नित्य समाज गायन का आयोजन व्यवस्थित रूप से चल रहा है। अन्यथा नित्य समाज गायन का क्रम कई मंदिरों में बंद हो गया है। ऐसी आशा है कि भविष्य में संगीत के सुधीजन वृंदावन की इस समाज गायन परंपरा से अवगत हो पाएँगे एवं वर्तमान में यहाँ के जिन मंदिरों में समाज गायन की स्थिति संकटपूर्ण है उन्हें भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

## पाद टिप्पणियाँ :-

1. अंतरंग सेवा जैसे–स्नान, भोग एवं शयन आदि।
2. श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रचारित किया गया भक्ति का सिद्धांत।
3. महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी का भक्ति रूपी साधन मार्ग पुष्टिमार्ग कहलाता है।
4. होली, दीपावली, हिंडोरे (सावन के झूले) आदि उत्सवों में गाये जाने वाले पद (समाज गायन)।
5. दिन के आठ प्रहरों में की जाने वाली ठाकुरजी की सेवा।
6. पितृपक्ष में सायं काल के समय श्री ठाकुर जी के गौचारण से लौटने के स्वागत में बनाई जाने वाली रंगोली।

## संदर्भ सूची


1. निगम ज्योत्सना, भगवद्भक्ति रसायन और भक्ति रस, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन दिल्ली, 2005
2. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, ब्रज संस्कृति और लोक संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, प्रथम संस्करण
3. अष्ट्याम सेवा पद्धति, श्री हित राधा केलि कुंज ट्रस्ट प्रकाशन, 2020
4. बर्मन, रवि प्रभा, पुष्टिमार्गीय कीर्तन सेवा (प्रथम खंड), प्रकाशक विजय कुमार बर्मन
5. साक्षात्कार : भट्ट, माधवेंद्र कृष्ण साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 11अगस्त 2024
6. शर्मा, सुरेंद्र शास्त्री, रसावतार श्री हित हरिवंश महाप्रभु, पत्रिका - श्री जयंती स्मारिका, सन् 1981-82, पृ. 115, सांस्कृतिक संस्थान, वृंदावन
7. शुक्ल, हित प्रियादास, श्री हित राधा बल्लभ भक्तमाल, जमुना प्रिंटिंग वर्क्स मथुरा, वि. सं. - 1986
8. वृंदावन शोध संस्थान में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथ - हित जू की जनम बधाई, Acc. No.- 11544-A
9. साक्षात्कार : वल्लभ, हित जीवन, साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 4 दिसंबर 2023
10. मीतल, प्रभु दयाल, ब्रज के धर्म सम्प्रदाय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1968
11. साक्षात्कार : शरण देव, श्रीदीनबंधु (नारदकुंड पीठाचार्य, गोवर्धन), साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 17 नवंबर 2023
12. साक्षात्कार : भट्ट, श्रीजनार्दन कृष्ण (भट्ट जी हवेली के आचार्य), साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 28 फरवरी 2024
13. साक्षात्कार : गोपाल जी मुखिया, अंशुमान (निंबार्क कोट वृन्दावन), साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 14 मार्च 2024
14. साक्षात्कार - बिहारी दास, श्रीवृंदावन (निंबार्क कोट मन्दिर गद्दी आचार्य), साक्षात्कर्त्रीः गंगा प्रिया, 14 मार्च 2024
15. शर्मा, अंजू, ब्रज संस्कृति में संगीत, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली- 1996
16. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, ब्रज संस्कृति और लोक संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस - नवम्बर 2009
17. शर्मा, सत्यभान, पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत परम्परा, हवेली संगीत, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2011
18. माथुर, नीता, हिन्दुस्तानी संगीत में होली गान, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2002
19. सक्सेना, राकेश बाला, मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1990
20. भट्ट, माधवेन्द्र कृष्ण, श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी एवं उनकी परम्परा, श्रीरघुनाथ फाउंडेशन, नई दिल्ली, 2021
21. टंडन, हरिहर नाथ, वार्ता साहित्य, भारत प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़, 1960